I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :-

१. अपने आपको कौन भाग्यशालिनी समझ रही हैं ?

उत्तर: गोपियाँ अपने आपको भाग्यशालिनी समझ रही हैं ।

२. गोपिकाएँ किसे संबोधित करते हुए बातें कर रही हैं ?

उत्तर: गोपिकाएँ उद्धव को संबोधित करते हुए बातें कर रही हैं ।

३. श्रीकृष्ण के कान में किस आकार का कुंडल है ?

उत्तर: श्रीकृष्ण के कान में मकराकृत कुंडल है ।

४. वाणी कहाँ रह गई ?

उत्तर: वाणी मुख में ही रह गई ।

५. कौन अंतर की बात जानने वाले हैं ?

उत्तर: प्रभु (कृष्ण) अंतर की बात जानने वाले हैं ।

६. श्रीकृष्ण के अनुसार किसने सब माखन खा लिया ?

उत्तर: श्रीकृष्ण के अनुसार उनके सखा सब माखन खा लिये ।

७. सूरदास किसकी शोभा पर बलि जाते हैं ?

उत्तर: सूरदास गोपी-कृष्ण के प्रेम भाव पर बलि जाते हैं ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. गोपिकाएँ अपने आप को क्यों भाग्यशालिनी समझती हैं ?

उत्तर: गोपियाँ कहती हैं - हे उद्धव! आज हम बड़भागी हो गई हैं धन्य -धन्य हो गई हैं ; अपनी जिन आँखों से तुमने हमारे प्रिय कृष्ण को देखा है, वे आँखों, अब हमें लग गई है । हम तुम्हारी आँखों में श्याम की आँखें, श्याम की मूरत देख रही हैं । जैसे अनुरागी भौरे के प्रिय सुमन की गंध पवन ले आती है (और उस गंध से बंधा भंवरा अपने प्रिय सुमन तक पहुंच जाता है) वैसे ही तुम्हें देखकर हमें आनन्द हो रहा है, तुम भी अपने अंग-अंग में कृष्ण का सुख राग (प्रेम, रंग) भर कर ले आए हो । जैसे दर्पण में अपना रूप देखने, से दृष्टि अधिक रूचिकर लगती है । उसी प्रकार तुम्हारे नेत्र रूपी दर्पण में कृष्ण के नेत्रों के दर्शण कर हमें बहुत अच्छा लग रहा है । जिन नेत्रों से तुमने श्याम को देखा है उन्हीं नेत्रों में हम झांक कर देख रहे हैं । सूरदास कहते हैं कि इस प्रकार आज हमें साक्षात् श्याम ही मिल गए हैं और हमारे तन ने विरह-व्यथा को छोड़ दिया है, श्याम मिलन की सुखानुभूति हमें हो रही है ।

Scanned with CamScanner

२. श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कीजिए ।

उत्तर: गोपियों ने नन्द नन्दन भगवान, श्रीकृष्ण को यमुना किनारे पर नटवर नागर वेश में देखा । सिर पर मोर मुकुट है, कानों में मकराकृत कुंडल हैं, कटि में पीताम्बर और शरीर पर चन्दन का लेप है, इस नटवर नागर रूप के दर्शन मात्र से गोपियों के तृषित नेत्र तृप्त हो गए, उनके हृदय में प्रज्वलित (प्रेम की) ज्वाला शान्त हो गई । वे सुन्दर ब्रजबालाएँ प्रेममग्न हो गईं, हृदय गद्‌गद् हो गया, प्रेमाधिक्य के कारण वाणी मुखद्वार तक ही आकर रह गई (बाहर निसृत नहीं हो पाई) कमल के समान सुन्दर नेत्रवाले कृष्ण यमुना तट पर खडे हैं पर गोपियाँ लाजवश मिलने में संकोच कर रही हैं कि प्रभु तो सबके हृदय की बात को जानने वाले हैं; गोपियों ने प्रभु मिलन का जो व्रत अपने हृदय में किया था उसे पूरा करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं आगे कदम बढ़ाकर गोपियों का स्वागत किया ।

३. सूरदास ने माखन चोरी प्रसंग का किस प्रकार वर्णन किया है?

उत्तर: कृष्ण की रोज़-रोज़ की माखन चोरी से एक गोपी बहुत परेशान थी, कई दिनों से ताक में थी कि किसी प्रकार कृष्ण को रंगे हाथों पकड़ूँ, आज कृष्ण पकडाई में आ गए तो गोपी कहने लगी-हे कृष्ण ! तुमने रात-दिन मुझे बहुत सताया है, रोज़-रोज़ चोरी करके भाग जाते हो, किसी तरह आज पकडाई में आए हो । मेरा सारा दधि-माखन खा लिये और शरारत अलग से की । सारे बर्तन-भांड़े भी फोड़कर चले गए; मैं अब तक असली चोर को पहचान नहीं पाई थी, पर अब बच्चू मेरे हाथ लगे हो, मैंने भी इस माखन चोर को भली भांति पहचान लिया है । इसके बाद गोपी ने कृष्ण के दोनों भुजाओं को पकडकर कहा, बोलो, अब कहाँ जाओगे? कहो तो तुम्हारी माँ से वह सारा-दधि-माखन मंगा लूँ जितना तूने खाया है? कृष्ण ने बड़े भोलेपन से उत्तर दिया, मैं तेरी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने तेरा माखन तनिक सा भी नहीं खाया है, यह तो सारे सखा मिलकर खा गए हैं । कृष्ण की इस भोली बात पर जैसे ही गोपी ने कृष्ण की ओर देखा कृष्ण मुस्कुरा दिए, कृष्ण की इस मुस्कुराहट पर विमोहित गोपी का सारा क्रोध शांत हो गया, मन में प्रेम भाव का उदय हो गया । प्रेम भाव से गोपी ने कान्हा को अपने हृदय से लगा लिया । सूरदास कहते हैं कि मैं गोपी-कृष्ण के इस प्रेम भाव पर बलि-बलि जाता हूँ ।

III. ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१. ऊधौ हम आजु भईं बड़ भागी ।

जिन अँखियन तुम स्याम बिलोके, ते अँखियाँ हम लागीं ।

जैसे सुमन बास लै आवत, पवन मधुप अनुरागी ।

Scanned with CamScanner

अति आनंद होत है तैसें, अंग-अंग सुख रागी ।

ज्यों दरपन मैं दरस देखियत, दृष्टि परम रुचि लागी ।

तैसैं सूर मिले हरि हमकौं, बिरह-बिथा तन त्यागी ॥

संदर्भ: कविता : सूरदास के पद

कवि : सूरदास

भावार्थ : गोपियाँ कहती हैं - हे उद्धव! आज हम बड़भागी हो गई हैं धन्य -धन्य हो गई हैं ; अपनी जिन आँखों से तुमने हमारे प्रिय कृष्ण को देखा है, वे आँखें, अब हमें लग गई हैं । हम तुम्हारी आँखों में श्याम की आँखें, श्याम की मूरत देख रही हैं । जैसे अनुरागी भौरे के प्रिय सुमन की गंध पवन ले आती है (और उस गंध से बंधा भंवरा अपने प्रिय सुमन तक पहुंच जाता है) वैसे ही तुम्हें देखकर हमें आनन्द हो रहा है, तुम भी अपने अंग-अंग में कृष्ण का सुख राग (प्रेम, रंग) भर कर ले आए हो । जैसे दर्पण में अपना रूप देखने, से दृष्टि अधिक रुचिकर लगती है । उसी प्रकार तुम्हारे नेत्र रूपी दर्पण में कृष्ण के नेत्रों के दर्शन कर हमें बहुत अच्छा लग रहा है । जिन नेत्रों से तुमने श्याम को देखा है उन्हीं नेत्रों में हम झांक कर देख रहे हैं । सूरदास कहते हैं कि इस प्रकार आज हमें साक्षात् श्याम ही मिल गए हैं और हमारे तन ने विरह-व्यथा को छोड़ दिया है, श्याम मिलन की सुखानुभूति हमें हो रही है ।

विषेशता:- प्रस्तुत पद में सूरदास गोपिकाओं के समर्पण भाव का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है ।

Scanned with CamScanner